अध्याय 21

अय्यूब का उत्तर

पहले भाषणों की अपेक्षा इस भाषण में अय्यूब ने मित्रों द्वारा लगाए गए आरोपों का सामना अधिक खुलकर किया। ''अंत में यहां पर वह मित्रों द्वारा समर्थन किए जाने वाले विचार का सीधा उत्तर देता है जिसमें यह भाषण उनके आरोपों के तर्कपूर्ण जवाब का रूप ले लेता है।''[1] मित्रों की धर्मशास्त्रीय गलती यह थी कि उनका मानना था कि हर व्यक्ति को उसके कर्मों का फल इसी जीवन में मिल जाता है। उनका विचार था ''धर्मी *हमेशा* फलवंत होते हैं; दुष्टों को *हमेशा* दण्ड मिलता है। यह तय करने के लिए कि कोई धर्मी है या दुष्ट उसके जीवन को देख लेना ही काफ़ी है।''

इस भाषण को चार भागों में बांटा जा सकता है: सहानुभूतिपूर्वक सुनवाई के लिए अपील (21:1–6); तर्क कि दुष्ट सफल होते हैं (21:7–16); इस आरोप का उत्तर कि परमेश्वर दुष्टों की संतान को दण्ड देगा (21:17–26); और एक आरोप कि मित्रों के उत्तर खोट से भरे हैं (21:27–34)।

''तुम सुन नहीं रहे हो!'' (21:1–6)

1तब अय्यूब ने कहा, 2''चित्त लगाकर मेरी बात सुनो; और तुम्हारी शान्ति यही ठहरे। 3मेरी कुछ तो सहो कि मैं भी बातें करूँ; और जब मैं बातें कर चुकूँ, तब ठट्ठा करना। 4क्या मैं किसी मनुष्य की दोहाई देता हूँ? फिर मैं अधीर क्यों न होऊँ? 5मेरी ओर देख कर चकित हो, और अपनी अपनी उंगली दाँतों तले दबाओ। 6जब मैं स्मरण करता तब मैं घबरा जाता हूँ, और मेरी देह थर-थर काँपने लगती है।''

आयतें 1, 2. चित्त लगाकर मेरी बात सुनो मूल भाषा में (*shim'u shamoa', शेमो शमोआ*) है जो शब्दश: ''सुन रहे, सुनो'' है। यह अय्यूब की बातों की ओर अपना पूरा ध्यान देने के लिए मित्रों को बुलाने का ज़ोरदार आशय है। संज्ञा शब्द **शांति** का सम्बन्ध क्रिया शब्द ''सांत्वना'' (*nacham, नाचाम*) से है; इन शब्दों से भाषण का आरम्भ और अंत होता है (21:2, 34)। याद रखें कि मित्र अय्यूब को ''सांत्वना'' देने के लिए आए थे (2:11), परन्तु अय्यूब ने उन पर ''निकम्मे शांतिदाता'' होने के लिए उन्हें फटकार दिया (16:2; NIV)। ''एक अर्थ में अय्यूब ने कहा कि उसे सबसे बड़ी 'शांति' वह केवल उसकी बात को सुनकर दे सकते थे।''[2]

आयत 3. ''मेरी कुछ तो सहो कि मैं भी बातें करूँ; और जब मैं बातें कर चुकूँ, तब ठट्ठा करना।'' आयत के पहले भाग का अनुवाद ''मेरा साथ दो और मैं *बोलूंगा*'' भी हो सकता है। ज़ोर देकर कहता हुआ इब्रानी व्यक्तिवाचक सर्वनाम ''मैं'' अय्यूब के अपनी बात कहने के इरादे का संकेत देता है। उसने दुष्टों के अंत के उनके विवरण को बेशक स्वीकार नहीं किया।

आयत के दूसरे भाग के सम्बन्ध में ऐल्बर्ट बार्नस ने टिप्पणी की है: ''जिस शब्द का अनुवाद *ठट्ठा* किया गया है उसका अर्थ मूल में हकलाना, अस्पष्ट बोलना और फिर असभ्य भाषा या बाहरी भाषा में बोलना, और फिर हंसी उड़ाना या मज़ाक या ठट्ठा उड़ाना या उपहास करना, या मज़ाक करना।''[3] एकवचन (''तुम'' – हिंदी में नहीं मिलता पर इसका संकेत मिलता है – अनुवादक)। यह संकेत देता है कि अय्यूब विशेषकर सोपर को जवाब दे रहा था।

आयत 4. अय्यूब की **दोहाई** परमेश्वर के सामने थी, न कि उसके मित्रों के सामने। अपनी वर्तमान स्थिति पर विचार करते हुए, उसने पूछा, **''मैं अधीर क्यों न होऊँ?''** KJV की भाषा से परिचित लोगों को याकूब की यह बात याद होगी: ''तुमने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है'' (5:11)। NASB में कहा गया है, ''तुम ने अय्यूब की सहनशक्ति के बारे में सुना है और यहोवा के व्यवहारों के बर्तावों के परिणाम को देखा है'' (5:11)। ''धीरज'' का हमारा विचार बिना शिकायत किए खामोशी से सह लेना है। अय्यूब की पुस्तक हमें बताती है कि सहने वालों के मन में भी संदेह और सवाल होते हैं जिन्हें समाधान पाने से पहले व्यक्त किया जाना आवश्यक है।

आयत 5. अय्यूब के यह कहने का कि **''मेरी ओर देख कर चकित हो, और अपनी अपनी उंगली दाँतों तले दबाओ,''** अर्थ यह हो सकता है कि वह चाहता हो कि उसके मित्र उसकी दयनीय शारीरिक व्यवस्था को देखें और ''खामोशी से अचम्भित होकर अपने अपने मुंह पर अपने अपने हाथ रख लें।''[4] एक और सम्भावना यह है कि अय्यूब ''उनसे कोई ऐसी बात सुनने को तैयार रहने को कह रहा है जो उन्हें नाराज, अचम्भित, हैरान कर देगी और उन्हें खामोश कर देगी।''[5]

अय्यूब की विपत्तियों में पड़ने से पहले हाकिम लोग अय्यूब के सामने बातें करना बंद करके आदरपूर्वक ''हाथ से मुंह बंद'' कर लिया करते थे (29:9, 10)। बाद में अय्यूब ने परमेश्वर के सामने आदरपूर्वक खामोशी में अपने मुंह पर हाथ रखता था (40:4, 5)।

आयत 6. अय्यूब अपनी शारीरिक दशा और दुष्टों की खुशहाली पर विचार करके **घबरा** गया और डर से **थर थर** कांपने लगा।

''दुष्ट लोग सफल होते है'' (21:7–16)

[7]''क्या कारण है कि दुष्ट लोग जीवित रहते हैं, वरन् बूढ़े भी हो जाते, और उनका धन बढ़ता जाता है? [8]उनकी सन्तान उनके संग, और उनके बाल-बच्चे उनकी आँखों के सामने बने रहते हैं। [9]उनके घर में भयरहित कुशल रहता है, और परमेश्वर की छड़ी उन पर नहीं पड़ती। [10]उनका साँड़ गाभिन करता और चूकता नहीं, उनकी गायें बियाती हैं और गर्भ कभी नहीं गिरातीं। [11]वे अपने लड़कों को झुण्ड के झुण्ड बाहर जाने देते हैं, और उनके बच्चे नाचते हैं। [12]वे डफ और वीणा बजाते हुए गाते, और बाँसुरी के शब्द से आनन्दित होते हैं। [13]वे अपने दिन सुख से बिताते, और पल भर ही में अधोलोक में उतर जाते हैं। [14]तौभी वे परमेश्वर से कहते, 'हम से दूर हो! तेरी गति जानने की हम को इच्छा नहीं रहती। [15]सर्वशक्तिमान क्या है कि हम उसकी सेवा करें? यदि हम उससे विनती भी करें तो हमें

क्या लाभ होगा?' [16]देखो, क्या उनका कुशल उनके हाथ में नहीं रहता? दुष्ट लोगों का विचार मुझ से दूर रहे।''

फ्रांसिस आई. एंडरसन ने कहा, ''मित्रों का शोकपत्र यह है कि पाप दु:ख का कारण होता है। उनका निष्कर्ष है कि दु:ख का होना पाप के होने को साबित कर देता है। अय्यूब दोनों का इनकार करता है। बेपरवाह जीवन का उसका आकर्षक रेखाचित्र पहले एलीपज द्वारा बनाए गए भले मनुष्य के चित्र से मेल खाता है (5:17-27)।''[6]

आयत 7. इस पद्य का आरम्भ अलंकारिक प्रश्न के साथ होता है जिसका अय्यूब के मित्रों के पास कोई उत्तर नहीं था: ''**क्या कारण है कि दुष्ट लोग जीवित रहते हैं, वरन् बूढ़े भी हो जाते, और उनका धन बढ़ता जाता है?**'' भले लोग आम तौर पर इस प्रश्न पर विचार करते हैं। यिर्मयाह ने एक ऐसा ही प्रश्न पूछा था:

> हे यहोवा, यदि मैं तुझ से मुकद्दमा लड़ूं, तौभी तू धर्मी है; मुझे अपने साथ इस विषय पर वादविवाद करने दे। दुष्टों की चाल क्यों सफल होती है? क्या कारण है कि विश्वासघाती बहुत सुख से रहते हैं? तू उनको बोता और वे जड़ भी पकड़ते; वे बढ़ते और फलते भी हैं; तू उनके मुंह के निकट है परन्तु उनके मनों से दूर है (यिर्मयाह 12:1, 2)।

एलीपज ने दुष्टों की धुंधली सी एक तस्वीर बनाई थी (5:2-7)। बिलदद ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा था कि दुष्टों का ''कोई पुत्र पौत्र न रहेगा और जहां वह रहता था वहां कोई बचा न रहेगा'' (18:19)। सोपर ने कहा था कि दुष्ट जन जवानी में ही मर जाता है (20:11)। अय्यूब ने यह कहते हुए कि दुष्ट लोग ''जीवित रहते हैं'' और बूढ़े होकर मरते हैं, ''उनका धन बढ़ता जाता है,'' इन विचारों का खण्डन किया। क्रिया शब्द ''जीवित रहते हैं'' (*chayah, चयह*) का अर्थ ''समृद्ध जीवन'' है।[7] ''धन'' (*chayil, चयिल*) का अर्थ ''सामर्थ'' और ''सम्पत्ति'' हो सकता है।[8]

आयत 8. ''**उनकी सन्तान उनके संग, और उनके बाल-बच्चे उनकी आँखों के सामने बने रहते हैं।**'' यह बात बिलदद की पुष्टि के बिल्कुल उलट है कि ''उसके कुटुम्बियों में उसके कोई पुत्र-पौत्र न रहेगा, और जहाँ वह रहता था, वहाँ कोई बचा न रहेगा'' (18:19)। अनुवादित शब्द ''बने रहते हैं,'' (*kun, कुन*), का अर्थ ''आबाद और मज़बूत'' होना है।[9]

आयत 9. ''**उनके घर में भयरहित कुशल रहता है, और परमेश्वर की छड़ी उन पर नहीं पड़ती।**'' धर्मियों के सम्बन्ध में एलीपज ने कुछ कुछ ऐसा ही कहा था: ''तुझे निश्चय होगा, कि तेरा डेरा कुशल से है, और जब तू अपने निवास में देखे तब कोई वस्तु खोई न होगी। तुझे यह भी निश्चित होगा, कि मेरे बहुत वंश होंगे। और मेरे सन्तान पृथ्वी की घास के तुल्य बहुत होंगे'' (5:24, 25)। ''परमेश्वर की छड़ी'' उसके क्रोध के साथ-साथ (यशायाह 10:5), उसकी सुरक्षा (भजन संहिता 23:4) और प्रभुता (भजन संहिता 110:2) को दर्शाने के लिए लाक्षणिक रूप में इस्तेमाल किया गया शब्द है। अय्यूब ने अपने-आपको परमेश्वर के क्रोध की छड़ी से मार खाने वाले के रूप में देखा जबकि दुष्ट लोग इससे बच गए।[10]

आयत 10. दुष्ट जन के मवेशी संग करते हैं और बिना किसी कठिनाई के बच्चे जनते हैं यानी बैल सफलतापूर्वक प्रजनन करते और उनकी गायों का गर्भ भी नहीं गिरता है। पवित्र शास्त्र के कई वचनों में इसे यहोवा की आशिषों की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है (व्यवस्थाविवरण 7:14; 28:4, 11; 30:9; जन संहिता 144:12–15)।

आयत 11. दुष्ट लोग इतने सुरक्षित हैं कि वे **अपने लड़कों को** खेलने के लिए ऐसे छोड़ सकते हैं जैसे चारागाह में चरने के लिए जाने वाले **झुण्ड** को। बेफिक्र बच्चे ऐसे **नाचते हैं** जैसे मेमना या मेढा नाचता है (देखें भजन संहिता 114:4, 6)।

आयत 12. दुष्ट लोग बाजों के साथ **गाते** हुए आनन्द भरे जश्न मनाते हैं। इसमें बाजों की तीन किस्में बताई गई हैं: **डफ** या ''डफली'' ठोकर से बजने वाला साज है, **वीणा** तार वाला साज है, और **बांसुरी** हवा से चलने वाला साज है।

आयत 13. दुष्ट लोग अपने मरने के दिन तक **सुख** से रहते हैं। वे आनन्द भरा जीवन जीते और पीड़ा रहित मृत्यु मरते हैं (देखें 21:23)।

आयत 14. अय्यूब ने जिन लोगों का वर्णन किया वे केवल दुष्ट ही नहीं बल्कि भक्तिहीन भी थे। **''तौभी वे परमेश्वर से कहते, 'हम से दूर हो! तेरी गति जानने की हम को इच्छा नहीं रहती।'''** रॉबर्ट एल. आल्डन ने कहा है,

> उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि परमेश्वर क्या सोचता है और वे अपने जीवनों और अंत:करण से अपने आपको उससे दूर रखना पसंद करते थे। दिखने में चाहे लगता था कि उसके अस्तित्व में उनका विश्वास था पर वे व्यावहारिक रूप में नास्तिक थे। ''जानना'' केवल ज्ञान नहीं, इस से बढ़कर है परन्तु इसमें परमेश्वर की आज्ञाकारिता, आदर और उसकी ''इच्छा'' को मानना शामिल था।[11]

''[परमेश्वर की] इच्छा'' उसके जीवन के ढंग को कहा गया है जो उसके निर्देशों के अनुसार आराधना करता और उसकी सेवा करता है।

आयत 15. '''सर्वशक्तिमान क्या है कि हम उसकी सेवा करें? यदि हम उससे विनती भी करें तो हमें क्या लाभ होगा?''' ये प्रश्न शैतान की फिलॉस्फी से जो कि विरोधी है, बिल्कुल मेल खाते हैं, जिसने यहोवा से यह सवाल किया था, '''क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है''' (1:9)। शैतान यह कह रहा था कि स्वार्थरहित भलाई जैसी कोई चीज़ नहीं है।

आल्डन ने बताया कि ये दोनों प्रश्न अय्यूब की पुस्तक की मुख्य बात पर प्रहार करते हैं।[12] भौतिकवादी लोगों का रवैया ''इसमें मुझे क्या मिलेगा?'' वाला होता है। इस विशेष आयत पर बार्नस की टिप्पणियां बहुत गहराई वाली हैं:

> क्या लाभ? इसलिए जान लो (1.) कि दुष्ट लोग परमेश्वर के बारे में जानने में अपने आप से और अपने दावों के पूरा होने से ही प्रभावित होते हैं। उनका सवाल यह नहीं होता कि सही क्या है, बल्कि यह होता है कि इससे उन्हें क्या लाभ होगा। (2.) यदि परमेश्वर की आराधना करने से उन्हें कोई त्वरित लाभ मिलता हुआ दिखाई न दे तो वे

> उसकी आराधना नहीं करेंगे। ... (3.) लोगों को चाहिए कि उन त्वरित, स्वार्थपूर्ण, और निजी भलाई की परवाह किए बिना जो उन्हें मिल सकती है, परमेश्वर की सेवा करें। ... (4.) उस सवाल का जवाब देना कठिन नहीं है जो किसी पापी की ओर से उठाया जाता है। परमेश्वर को पुकारने का लाभ है।[13]

मसीही लोग जानते हैं कि प्रभु का नाम लेने का लाभ है। हमें क्षमा, शांति, आनन्द, और अनन्त जीवन मिलता है। परमेश्वर की सेवा करने से परिवार और समाज को दृढ़ता मिलती है।

आयत 16. अय्यूब ने इस पद्य का समापन यह नकारते हुए किया उसके मन में ये दुष्ट विचार थे। जॉन. ई हार्टले ने लिखा है:

> इसलिए वह दो स्तरों पर सोपर की बात के विरुद्ध तर्क दे रहा है: (1) क्योंकि ऐसे दुष्ट लोग हैं जो सफल होते और बुढ़ापे तक जीवित रहते हैं और इसलिए उसका अपना दु:ख उसे दुष्टों की श्रेणी में नहीं डाल देता; (2) वह दुष्टों की सलाह को पूरी तरह से नकार देता है इसलिए उसे उनके साथ नहीं मिलाया जा सकता।[14]

''आम तौर पर दुष्टों को दण्ड नहीं मिलता'' (21:17-26)

17''कितनी बार दुष्टों का दीपक बुझता है? या उन पर विपत्ति आ पड़ती है? या परमेश्वर क्रोध करके उनके भाग में शोक देता है? 18क्या वे वायु से उड़ाए हुए भूसे, और बवण्डर से उड़ाई हुई भूसी के समान होते हैं? 19तुम कहते हो, 'परमेश्वर उसके अधर्म का दण्ड उसके बाल-बच्चों के लिये रख छोड़ता है,' वह उसका बदला उन्हीं को दे, ताकि वह जान ले। 20दुष्ट अपना नाश अपनी ही आँखों से देखे, और सर्वशक्तिमान के क्रोध में से आप पी ले। 21क्योंकि जब उसके महीनों की गिनती कट चुकी, तो अपने बादवाले घराने से उसका क्या काम रहा। 22क्या परमेश्वर को कोई ज्ञान सिखाएगा? वह तो ऊँचे पद पर रहनेवालों का भी न्याय करता है। 23कोई तो अपने पूरे बल में बड़े चैन और सुख से रहकर मर जाता है। 24उसकी देह दूध से और उसकी हड्डियाँ गूदे से भरी रहती हैं। 25कोई अपने जीव में कुढ़ कुढ़कर बिना सुख भोगे मर जाता है। 26वे दोनों एक समान मिट्टी में मिल जाते हैं, और कीड़े उन्हें ढाँक लेते हैं।''

आयतें 17, 18. ''कितनी बार दुष्टों का दीपक बुझता है? या उन पर विपत्ति आ पड़ती है?'' बिलदद ने अय्यूब के जैसा ही दावा किया था: ''निश्चय दुष्टों का दीपक बुझ जाएगा, और उसकी आग की लौ न चमकेगी। उसके डेरे में का उजियाला अन्धेरा हो जाएगा और उसके ऊपर का दिया बुझ जाएगा'' (18:5, 6)।

''या परमेश्वर क्रोध करके उनके भाग में शोक देता है?'' दुष्टों के पतन की बात करने के बाद सोपर ने कहा, ''परमेश्वर की ओर से दुष्ट मनुष्य का अंत यही है'' (20:29)। संज्ञा शब्द ''अंश'' (*cheleq, चलक*) का सम्बन्ध इस वचन में क्रिया शब्द ''भाग'' (*chalaq*) से है।

''क्या वे वायु से उड़ाए हुए भूसे, और बवण्डर से उड़ाई हुई भूसी के समान होते हैं?''

बुद्धि के साहित्य और नबियों की पुस्तकों में दुष्टों की तुलना कई बार ''पवन'' से उड़ाई गई ''भूसी'' से की जाती है (भजन संहिता 1:4; 35:5; 83:13; यशायाह 17:13; 29:5; होशे 13:3)। ''पवन'' परमेश्वर के ईश्वरीय श्वास के जैसी है (यशायाह 40:24)।

इन प्रश्नों को पूछकर अय्यूब ने मित्रों के इस दावे पर विवाद खड़ा कर दिया कि ''शोक'' *हमेशा* दुष्टों को ही घेरता है। कई बार ऐसा हो भी सकता है, पर यह स्पष्ट रूप में सामान्य नियम नहीं है। अय्यूब ने चाहा कि उसके मित्र इस तथ्य के प्रकाश में इसके मामले पर फिर से विचार करें।

आयत 19. ''तुम कहते हो, 'परमेश्वर उसके अधर्म का दण्ड उसके बाल-बच्चों के लिये रख छोड़ता है।''' ''तुम कहते हो'' इब्रानी धर्मशास्त्र में नहीं है, पर यह सम्भव है कि इन शब्दों को आयत को सही ढंग से समझाने के लिए जोड़ा गया है। एच. एच. रोअले ने कहा है कि यह बात ''उस आपत्ति का उत्तर है जो अय्यूब को लगता है कि उसके मित्र उठा सकते हैं कि दुष्ट व्यक्ति यदि दण्ड से बच जाता है तो उसके बच्चों को उसका दु:ख उठाना पड़ेगा।''[15] परमेश्वर ने यह घोषणा की कि वह लोगों के साथ इस प्रकार से बर्ताव नहीं करता:

> जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा (यहेजकेल 18:20)।

निश्चय ही बच्चों को अपने माता-पिता के पापों के कारण कई बार गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं, परन्तु परमेश्वर उन्हें उनके माता-पिता के पापों के लिए दोषी नहीं ठहराता है।

आयत 20. दुष्ट व्यक्ति को उसकी दुष्टता का दण्ड दिया जाना चाहिए। **देखें** और **पी लें** क्रिया शब्द निजी अनुभव पर ज़ोर देते हैं। परमेश्वर के **क्रोध** के कटोरे में से दाखरस का पीना पवित्र शास्त्र में सामान्य रूपक है (भजन संहिता 75:8; यशायाह 51:17; यिर्मयाह 25:15; 49:12; यहेजकेल 23:31-34; प्रकाशितवाक्य 14:10; 16:19)।

आयत 21. दुष्ट व्यक्ति का स्वार्थ उसे उन परिणामों के प्रति उदासीन कर देगा जो उसके बच्चों को भुगतने पड़ सकते हैं। वह केवल वर्तमान के लिए जीता है और उसे इस बात की कोई चिंता नहीं है कि **जब उसके महीनों की गिनती कट** जाएगी, तब क्या होगा।

आयत 22. ''क्या परमेश्वर को कोई ज्ञान सिखाएगा? वह तो ऊँचे पद पर रहनेवालों का भी न्याय करता है?'' एली ने कहा है कि ''निष्पक्ष न्याय के लिए सम्पूर्ण ज्ञान का होना आवश्यक है, जो किसी भी मनुष्य को नहीं है; कुछ बातें है जिनका न्याय न तो अय्यूब कर सकता है और न ही उसके मित्र।''[16]

आयतें 23-26. धर्मियों और दुष्टों का हाल जीते जी एक सा होता है। कुछ तो सुख से रहते हैं जबकि और लोग बड़ी बुरी हालत में। सब पर एक ही सामान्य नियम लागू नहीं होता क योंकि जीवन उससे कहीं जटिल है।

''कोई तो अपने पूरे बल में बड़े चैन और सुख से रहकर मर जाता है। उसकी देह दूध से और उसकी हड्डियाँ गूदे से भरी रहती हैं।'' ''उसकी देह दूध से भरी रहती है'' एक कठिन वाक्यांश का एक सम्भावित अनुवाद है।[17] एक और विकल्प है ''उसके बर्तन दूध से भरे रहते

हैं'' (ASV; NKJV; NJPSV)। इस व्यक्ति ने चाहे वह धर्मी हो या दुष्ट, बढ़िया खाने और बढ़िया सेहत का भरपूर आनन्द लिया है। उसका जीवन सुख और विलास से भरपूर है।

''कोई अपने जीवन में कुढ़ कुढ़कर बिना सुख भोगे मर जाता है।'' यह व्यक्ति चाहे धर्मी या दुष्ट जीवन की अच्छी अच्छी चीज़ों के बिना मर गया। उसका जीवन कष्ट और पीड़ा से भरा हुआ जीवन था।

''वे दोनों एक समान मिट्टी में मिल जाते हैं, और कीड़े उन्हें ढाँक लेते हैं।'' धनवान और निर्धन दोनों का अंत एक सा ही है (3:11-19): उन्हें दफ़ना दिया जाता है और उनके शरीर को ''कीड़े'' ढांप लेते हैं (देखें 17:13-16)।

''तुम्हारे उत्तर गलत हैं'' (21:27-34)

27''देखो, मैं तुम्हारी कल्पनाएँ जानता हूँ, और उन युक्तियों को भी, जो तुम मेरे विषय में अन्याय से करते हो। 28तुम कहते हो, 'रईस का घर कहाँ रहा? दुष्टों के निवास के डेरे कहाँ रहे?' 29परन्तु क्या तुम ने बटोहियों से कभी नहीं पूछा? क्या तुम उनके इस विषय के प्रमाणों से अनजान हो, 30कि विपत्ति के दिन दुर्जन सुरक्षित रहता है; और महाप्रलय के समय ऐसे लोग बचाए जाते हैं? 31उसकी चाल उसके मुँह पर कौन कहेगा? उसने जो किया है उसका बदला कौन देगा? 32तौभी वह क़ब्र को पहुँचाया जाता है, और लोग उस क़ब्र की रखवाली करते रहते हैं। 33नाले के ढेले उसको सुखदायक लगते हैं; और जैसे पूर्वकाल के लोग अनगिनत जा चुके, वैसे ही सब मनुष्य उसके बाद भी चले जाएँगे। 34तुम्हारे उत्तरों में तो झूठ ही पाया जाता है, इसलिये तुम क्यों मुझे व्यर्थ शान्ति देते हो?''

आयत 27. मित्रों ने नीरसतापूर्वक अपने सारे भाषणों में एक ही दृष्टिकोण को दोहराया था। अब तक अय्यूब को उनकी **कल्पनाएं** और **युक्तियों** का पता चल चुका था। उसे समझ में आ गया कि उसके तर्कों का उन्हें यकीन नहीं था और वह उनके वितर्कों को समझ सकता था। **जो तुम मेरे विषय में अन्याय से करते हो** वाक्यांश में क्रिया शब्द *chamas* (*चामास*) का अनुवाद ''बलपूर्वक बर्ताव करते हैं'' भी हो सकता था।[18]

आयत 28. ''तुम कहते हो, 'रईस का घर कहाँ रहा? दुष्टों के निवास के डेरे कहाँ रहे?''' मित्र यह कह रहे थे कि ''दुष्टों का डेरा'' नष्ट हो जाता है (8:15, 22; 15:34; 18:14, 15, 21; 20:26, 28)। ''रईस'' और ''दुष्ट'' दोनों को आमने-सामने रखा गया है। इस प्रकार के शब्दों से मित्र यह संकेत दे रहे थे कि अय्यूब ने अपनी उच्च पदवी दुष्ट होकर प्राप्त की थी।

आयत 29. अय्यूब ने **बटोहियों** के **प्रमाणों** की ओर ध्यान दिलाते हुए ऐसी सोच का उत्तर दिया। जो हू-ब-हू दिखते थे और इस प्रकार से बहुत सा अनुभव प्राप्त कर लेते थे। यह संकेत नहीं दिया गया है कि ये लोग भले थे या बुरे। दिलचस्प बात यह है कि एलीपज ने पहले परदेसियों के ज्ञान को नकारा था (15:18, 19)।

आयत 30. ''कि विपत्ति के दिन दुर्जन सुरक्षित रहता है; और महाप्रलय के समय ऐसे लोग बचाए जाते हैं?'' विलियम डी. रेबर्न ने इस आयत को मुसाफिरों की रिपोर्ट की बातों के रूप में देखा।[19] ''सुरक्षित'' *chaśak* (*चसक*), के लिए बेहतर शब्द ''रक्षा'' होगा, जो इस

वाक्य का अर्थ उलट देता है। इस आयत के इन अनुवादों को देखें:

> ''बुरे व्यक्ति को विपत्ति के दिन से छोड़ा जाता है, ... उसे क्रोध के दिन से निकाला जाता है'' (NIV)।
>
> ''जिस दिन परमेश्वर क्रोध करके दण्ड देता है, उस दिन दुष्ट व्यक्ति को ही छोड़ा जाता है'' (TEV)।
>
> ''दुष्ट मनुष्य को विपत्ति के दिन में छोड़ा जाता है, ... उसे क्रोध के दिन में बचाया जाता है'' (RSV)।
>
> ''जब विपत्ति आती है तो दुष्ट को छोड़ दिया जाता है और क्रोध के दिन से पहले सुरक्षा को बता दिया जाता है'' (NEB)।
>
> ''क्योंकि बुरे मनुष्य को विपत्ति के दिन छोड़ दिया जाता है, उस दिन जब क्रोध बढ़ता है'' (NJSPV)।

अय्यूब का मानना था कि पैदल घूमने वाले लोगों की सर्वसम्मति यह थी कि दुष्टों को न्याय तक लाने के बजाय आम तौर पर इससे बचा लिया जाता था जिससे वे ''कानून के फंदे से'' बच जाते थे।

आयत 31. ''उसकी चाल उसके मुँह पर कौन कहेगा? उसने जो किया है उसका बदला कौन देगा?'' अय्यूब के अलंकारिक प्रश्न का उत्तर है कि ''कोई नहीं''! ''उसके मुंह पर कौन कहेगा।'' वाक्यांश का अक्षरश: अनुवाद ''उसके सामने कौन घोषणा करेगा'' हो सकता है (देखें NRSV; NJPSV)। दूसरे लोग दुष्ट मनुष्य का सामना करने या सरेआम उसका न्याय करने से डरते हैं, क्योंकि वह उन्हें नुक्सान पहुंचा सकता है।

आयत 32. दुष्ट व्यक्ति को ठाठ-बाठ से रीतिरिवाज़ के अनुसार दफ़नाया जाता है; लोग उसकी लाश की देखरेख करते हैं। हार्टले ने लिखा है, ''आदरपूर्वक जनाजा किसी समाज में नागरिकों को दिए जाने वाले सबसे बड़े पुरस्कार जैसा था।''[22] शायद यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसे कोई परेशानी न हो और उसका पूरा सम्मान हो रहा है, उस आदमी की **कब्र की रखवाली** करने के लिए पहरेदार भी होते थे।[23]

आयत 33. वह कब्र में चैन से आराम करेगा। अपने जीवन में उसके द्वारा की गई बुराई के लिए किसी क्रोध या दु:ख को उठाने का कोई संकेत नहीं दिया गया। **पूर्वकाल के लोग** और **उसके बाद भी चले जाएंगे** का अर्थ जनाजे के लिए (TEV; NEB; NLT) या उसके पहले या बाद में मरने वाले लोग हो सकते हैं। बाद वाला अर्थ अधिक सम्भव लगता है।

आयत 34. अय्यूब ने इस उत्तर को मित्रों की कठोर आलोचना के साथ समाप्त किया। उसे **शांति** देने के उनके प्रयास विफल रहे थे (21:1, 2 पर टिप्पणियां देखें), और उनके **उत्तरों** में **झूठ** (*ma'al, माल*) भरा हुआ था। इस इब्रानी शब्द का अनुवाद ''बेवफ़ाई'' या ''ढोंग'' जैसे मज़बूत शब्द के साथ हो सकता था।[24]

प्रासंगिकता

''तुम सुन रहे हो न?'' (अध्याय 21)

मैं प्रचारकों को अपने संदेश के बीच में रुककर यह प्रश्न पूछते हुए बड़ा हुआ हूं कि ''तुम सुन रहे हो न?'' इस बात की पूरी-पूरी सम्भावना है कि वे प्रश्न इसलिए पूछा करते थे कि कुछ सदस्य ऊंघ रहे होते थे, कुछ के मन इधर-उधर भटक रहे होते थे, और दूसरों का यूं ही ध्यान उधर नहीं होता था। चाहे अधिकतर लोग वक्ता की ओर सीधे देख रहे होते थे, पर उसके लिए यह जानने का कोई तरीका नहीं होता था कि सुनने वाले सचमुच में उसकी बात को सुन रहे हैं। मत्ती 13 में, यीशु से पूछा गया कि वह दृष्टांत देकर क्यों सिखाता है। उसने पुराने नियम के नबी यशायाह से उद्धृत करते हुए इसका जवाब दिया।

> ''तुम कानों से तो सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और आंखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आंखें मूंद लीं हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं'' (मत्ती 13:14, 15)।

यीशु ने आगे कहा, ''पर धन्य है तुम्हारी आंखें, कि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं'' (मत्ती 13:16)।

1 शमूएल 3 में सुनने की एक दिलचस्प कहानी है। परमेश्वर का जन एली याजक था। वह बालक शमूएल का सलाहकार था और उसे प्रशिक्षण दे रहा था। एक रात की बात है कि ''यहोवा के मन्दिर में जहां परमेश्वर का संदूक था'' वे वहां लेटे हुए थे और यहोवा ने शमूएल को पुकारा (1 शमूएल 3:2, 3)। शमूएल यह सोचकर भागकर एली के पास गया कि उसके सलाहकार ने उसे बुलाया है। एली ने शमूएल को नहीं बुलाया था और उसे यह समझ में नहीं आया कि परमेश्वर उससे बात कर रहा था। जब अंत में एली इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि परमेश्वर ही उसे बुला रहा है, तो उसने शमूएल से कहा, ''जा लेट रह; और यदि वह तुझे फिर पुकारे, तो तू कहना, कि हे यहोवा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है तब शमूएल अपने स्थान पर जाकर लेट गया'' (1 शमूएल 3:9)। परमेश्वर को हमारी सुनने की कुशलता पसंद है। उसे यह अच्छी लगती है कि हम क्या सुनते हैं (मरकुस 4:24), और वह हमें अपना वचन सुनाना चाहता है क्योंकि विश्वास इसी से आता है (रोमियों 10:17)। वह चाहता है कि हम उसके पुत्र की सुनें (मत्ती 17:5)। परमेश्वर की दिलचस्पी इस बात में भी रहती है कि हम जो कुछ सुनते हैं उसे व्यवहार में कैसे लाते हैं (मत्ती 7:24)। परमेश्वर का जी उठा पुत्र जब आसिया की सात कलीसियाओं के बीच में चल रहा था और उसने यूहन्ना का उनका मूल्यांकन किया तो यीशु ने हर मूल्यांकन का अंत इन शब्दों के साथ किया: ''जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (प्रकाशितवाक्य 2:7, 11, 17, 29; 3:6, 13, 22)।

क्या आपने कभी किसी से बात की है, जब आपको लगा कि वह व्यक्ति आपकी बात सुन नहीं रहा। क्या ऐसा हुआ कि अपना पूरा ज़ोर लगाने के बाद भी आपको लगा कि आपकी बात को सुना या समझा नहीं? यह परेशान करने वाला है और अध्याय 21 में अय्यूब की हालत यही है।

अय्यूब ने कहा, ''चित लगाकर मेरी बात सुनो'' (21:2)। इस दुखद परीक्षा के हर भाषण में अय्यूब ने अपने निष्कलंक होने और अपने खरा होने को बनाए रखा और उसके मित्रों को उस पर विश्वास नहीं हुआ। दूसरी बार सोपर ने अय्यूब पर दुष्ट होने का आरोप लगाया था; वह अय्यूब को बताना चाहता था कि परमेश्वर उसे दण्ड दे रहा है। सोपर ने उन शब्दों को सुना था जो अय्यूब ने कहे थे। उसने अय्यूब को अपने निष्कलंक होने की घोषणा करते सुना, पर वह उसे सुन नहीं रहा था। अय्यूब ने सोपर से सीधे-सीधे उसके भाषण को ''ध्यान से सुनने'' को कहा (21:2), और उसे बीच में न टोकने को कहा (21:5)। कमजोर संचार की एक सबसे बड़ी समस्या अच्छी तरह न सुनना है जो कही जा रही बात पर पूरी तरह से ध्यान देने से रोकता है। एक अच्छा स्रोता बनने के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हैं:

(1) *ध्यान दें।* बोलने वाले की ओर सामने देखें। ध्यान भटकाने वाले विचारों को किनारे कर दें। मन ही मन खण्डन करने को तैयार न रहें! वातावरण से सम्बन्धित बातों से विचलित होने से बचें। बोलने वाले के हाव-भाव को सुनें। बीच में बातें करने से बचें। ...

(2) *दिखाएं कि आप सुन रहे हैं।* बीच-बीच में सिर हिलाते रहें। मुस्कुराएं और चेहरे के अन्य हावभावों का इस्तेमाल करें। अपने बैठने या खड़े होने के ढंग पर ध्यान दें और यह सुनिश्चित करें कि यह उदार और लुभावना है। बोलने वाले को छोटी टिप्पणियों के साथ बोलते रहने के लिए प्रोत्साहित करें।

(3) *फीडबैक लें।* जो कुछ यहां कहा गया है उसे दर्शाएं। ''मैं सुन पा रहा हूं कि ...'' और ''लगता है कि आपके कहने का मतलब है कि ... विचार जताने के लिए बहुत बढ़िया तरीका है। कुछ बातों को स्पष्ट करने के लिए प्रश्न पूछें। उदाहरण के लिए, ''आपके कहने का यह मतलब है?''

(4) *निर्णय करने को टाल दें।* बोलने वाले को अपनी बात पूरी करने दें। वितर्कों से उसे बीच में न टोकें।

(5) *समुचित ढंग से उत्तर दें।* अपने जवाब में सरल, स्पष्ट और ईमानदार बनें। अपने विचारों को सम्मानपूर्वक रखें। दूसरे व्यक्ति के साथ ऐसे बर्ताव करें जैसे आप चाहते हैं कि आपके साथ किया जाए।[25]

सोपर ने सुनने की इन अच्छी तकनीकों को नहीं अपनाया। वह आलोचनात्मक ही रहा और अय्यूब के बताए विचारों का खण्डन करता था। अय्यूब को इसकी आवश्यकता नहीं थी। उसे अपने मित्र की आवश्यकता थी, जो उसकी बात ध्यान से सुनें।

अय्यूब ने कहा, ''मेरी कुछ तो सहो'' (21:3)। मसीहियत ''एक दूसरे'' का धर्म है। ''एक दूसरे'' के बड़े हवालों में से एक गलातियों 6:2 में मिलता है जहां पर बाइबल कहती है, ''एक दूसरे का भार उठाओ।'' अय्यूब के मित्र उसकी सह नहीं रहे थे और न उन्होंने उसके भार उठाने में उसकी सहायता की थी। अय्यूब को अपने विचारों, भावनाओं और अपने निर्दोष होने को बताने के लिए कोई चाहिए था। अय्यूब ने माना कि वह ''परेशान'' था। उसके मित्रों को चाहिए था कि जब वह अपने साथ बीती हुई हर बात बताते हुए अपने विचारों के द्वारा उनसे बात

कर रहा था तो वे उसके साथ धीरज बरतते। मसीही जीवन पर "एक दूसरे" के बड़े अध्याय रोमियों 12 में बाइबल कहती है:

> प्रेम निष्कपट हो; ... भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। पवित्र लोगों को जो कुछ आवश्यक हो, उसमें उनकी सहायता करो; पहुनाई करने में लगे रहो। अपने सतानेवालों को आशीष दो; आशीष दो स्राप न दो। आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो, और रोनेवालों के साथ रोओ। आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो (रोमियों 12:9–16)।

जब हम "एक दूसरे" के वाक्याशों को ध्यान से देखते हैं तो हमें स्पष्ट हो जाता है कि सोपर ने इन्हें नहीं माना था। अय्यूब को आवश्यकता थी कि सोपर उसकी सहता और उसकी सुनता! अय्यूब को नहीं लगता था कि उसका उत्तर सुनने के बाद सोपर उसके प्रति सहानुभूति रखेगा (21:3)।

अय्यूब ने कहा, "मेरी ओर देखो" (21:5)। सोपर अय्यूब पर भाषण तो झाड़ता रहा, पर वह उसे ध्यान से नहीं देख पाया। क्या आप यह देख सकते हैं कि अय्यूब की हालत कितनी तरसयोग्य होगी? क्या आप देख सकते हैं कि अय्यूब की सूजी हुई, लाल आंखें, दुःख और आंसुओं से भरी हुई हैं? क्या आप अय्यूब के चेहरे की निराशा और अपने तीनों मित्रों के प्रति उसकी परेशानी को देख सकते हैं जो उसकी बात पर विश्वास नहीं कर रहे थे? अय्यूब ने चिल्लाकर कहा, "मेरी ओर देखकर चकित हो ... मेरी देह थरथर कांपने लगती है" (21:5, 6)।

सोपर द्वारा उसकी ओर पूरा ध्यान दिए जाने के बाद, अय्यूब एक-एक करके सोपर के दूसरे भाषण को बताने लगा। अय्यूब ने बड़े रौबदार ढंग से सोपर से प्रश्न पूछे (21:7, 15, 17, 18, 21, 22, 29, 31)। अय्यूब ने सोपर से यह सवाल करते हुए अपने भाषण को समाप्त किया: "तुम्हारे उत्तरों में तो झूठ ही पाया जाता है, इसलिये तुम क्यों मुझे व्यर्थ शान्ति देते हो?" (21:34)।

यदि हम अच्छे शांति देने वाले और मित्र बनना चाहते हैं तो हमें अच्छे सुनने वाले बनना सीखना आवश्यक है, हमें उनके बोझ उठाने में सहायता करना आवश्यक है, हमें उन्हें ध्यान से देखना आवश्यक है। एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 187. [2]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 219. [3]ऐल्बर्ट बार्नस, *अय्यूब,* नोट्स ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट, सम्पा. रॉबर्ट फ्रू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1949), 1:347. [4]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 311. [5]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 389. [6]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,*

टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 199. [7]हार्टले, 313. [8]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:311. [9]रैबर्न, 392. [10]हेली, 189.

[11]आल्डन, 223. [12]वहीं। [13]बार्नस, 1:353. [14]हार्टले, 315. [15]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 187. [16]हेली, 193. [17]हार्टले, 317–18, एन. 3 में चर्चा देखें। [18]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:329. [19]रैबर्न, 406. [20]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:359 देखें।

[21]हेली, 195. [22]हार्टले, 321. [23]वहीं। [24]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:613. [25]"Active Listening: Hear What People Are Really Saying" (http://www.mindtools.com/CommSkll/ActiveListening.htm; Internet; 22 October 2009 को देखा गया)।